माया बिल्कुल ही बेहोश कर देती है। इस युध के मैदान में। तो कहा जाता है मन्मनाभव। और वरसे को याद करो। यह है संजीवनी बुटी। हनुमान तो तुम सभी हो। नम्बरवार महावीर हो। वहुत बेहोश हुये पड़े हैं उनको होश में लाना है तो कुछ जीवन वना ले। देह में भी मोह न रखना चाहिए। मोह रखना चाहिए वाप और अविनाशी ज्ञान रत्नों में। जितनी धारणा होगी उतनी दूसरों को करावेंगे। वाप कहते हैं हमको ज्ञानी तू आत्मा प्रिय लगते हैं। प्रदर्शनी सर्विस के लिये वावा ज्ञानी तू आत्मा को ही ढूढते हैं। समझाना तो वहुत सहज है। कितने वड़े 2 आदमी सुन कर खुश होते हैं। समझते हैं जीवन वनानी है तो इस संस्था द्वारा वनानी है। यह भी कोटों में कोऊ समझते हैं। तुम जानते हो यह है वेहद का सन्यास। हम जो कुछ इस पुरानी दुनिया में देखते हैं यह खत्म हो जावेगा। अभी तो वाप से वरसा लेना है। वापस जाना है। फिर से हम सूर्यवंशी कुल में आकर राज्य करेंगे। राज्य किया था, फिर माया रावण ने छीन लिया। कितना सहज है। मीठे ते मीठे वाप को याद करना है। दिल वाप के पास लगी हुई हो। वाकी इन कर्मइन्द्रि द्वारा कर्म तो करना ही है। तो श्रीमत पर चलना है। लाडले मीठे 2 वच्चों को वाप कहते हैं मुख से सदैव ज्ञान रत्न निकालो। पत्थर न निकालो। कोई भी संसार समाचार की वातें न निकालो नहीं तो मुख कड़वा हो जावेगा। एक दो को रत्न देते हो। तुम्हारे पास रत्नों की झोली है। मनुष्य विनाशी धन दान करते हैं। भारत को महादानी कहा जाता है। इस समय वाप वच्चों को दान करते हैं। वच्चे वाप को दान करते हैं। वावा यह शरीर सहित सव कुछ आपका है। वाप फिर कहते हैं वच्चे यह विश्व की वादशाही तुम्हारी है। यह पुरानी दुनिया का सभी खत्म होना ही है। तो क्यों न हम वाप से सौदा कर लें। वावा यह तन मन धन जो खत्म हो जाने वाला है सो यह आप ले लो। रिटर्न में हमको भविष्य में राजाई देना। हम यही चाहते हैं और कोई चीज की दरकार नहीं। ऐसे नहीं कि तन मन धन देते हैं तो कोई भूख मरते हैं। नहीं। शिव वावा का भण्डारा है जिससे सभी का शरीर निर्वाह होता है। होता रहेगा। भल कहानियाँ हैं द्रौपदी के डेगर को खुर खर हुई फिर भी विजय तो हुई ना। अव प्रैक्टीकल में पार्ट चल रहा है। शिव वावा का भी भण्डारा सदैव भरपुर है। वह भी एक परीक्षा थी। जिन को डर हुआ तो समझा जाकर अपने माँ वाप पास सुखी होऊँ। तो चले गये। वाकी साथ देने वाले चले आये हैं। भूख मरने की तो वात ही नहीं। अव तो वच्चों के लिये महल वन रहे हैं। अच्छा रहना है तो मेहनत कर अपना पद ऊँच वनाना है। यह कल्प 2 की वाजी है। इस वारी इम्तहान में नापास हुये तो कल्प 2 नापास होते रहेंगे। पास इतना होना है जो मम्मा वावा के तख्त पर वैठें। 21 जन्म तख्त पिछाड़ी तख्त पर वैठे रहें। अच्छा राजाई पद तो ले लेवें। माँ वाप तो कहेंगे यह क्या तुम राजाई पद नहीं ले सकते हो। मित्र सम्वन्धियों आदि को याद करते रहते हो। एक वाप के सिवाये और कोई को याद न रहे। मुरली लिखना वड़ी अच्छी सर्विस है। सभी खुश होंगे। आशीर्वाद करेंगे वावा अक्षर वहुत अच्छे आते हैं। नहीं तो लिखते हैं अक्षर वहुत झुझाँर है। वावा हमें टूटी फुटी रत्न भेज देते हैं। वहुत कट करते हैं। हमारे रत्नों की चोरी हो जाती है। वावा हम अधिकारी है। जो रत्न मुख से निकलते हैं वह सभी हमारे पास आना चाहिए। यह कहेंगे वही ~~छत्रेक्ष××रत्नों~~ जो रत्नों के शौकीन होंगे। अन्यन्य होंगे। यह भी अच्छी रीत सेवा करनी चाहिए। भाषाएँ सीखने में कोई देरी नहीं लगती है। मराठी वाला तो झट मराठी में कापियाँ निकाले। गुजराती वाला गुजराती में कापी निकाले। यह व्राहमणी को ख्याल रखना चाहिए। आसामी भी देखनी पड़ती है। मुरली चाहिए तो पैसा भी खर्च करना चाहिए। कोई तो हवली ऐसे है मुरली माँगते रहते हैं। यह नहीं समझते